जेएसपीएल फाउंडेशन ने किया 'वर्ल्ड ऑटिज्म अवेयरनेस डे' पर जागरूक

कोविड-19 महामारी के दौरान ऑनलाइन हुए 2500 सत्र

रायगढ़। ऑटिम एक प्रकार की मानसिक बीमारी है जिसके कारण मानसिक विकास ठीक से नहीं होता। इस गंभीर बीमारी के प्रति लोगों में जागरूकता लाने के उद्देश्य से जेएसपीएल फाउंडेशन द्वारा 2 अप्रैल को 'वर्ल्ड ऑटिज्म अवेयरनेस डे' मनाया जाता है। कोविड-19 महामारी के सतर्कताओं के मद्देनजर इस अवसर पर आन लाइन ऐसे अभिभावकों को जिनके बच्चों में इसके लक्षण नजर आते हैं उन्हें इस गंभीर बीमारी के प्रति जानकारी दी गई तथा इस बीमारी से उपचार ले रहे ऐसे लक्षण वाले बच्चों को सेवाएं उपलब्ध कराई गई। इसके अलावा वृक्षारोपण कर ऑटिज्म जागरूकता का सन्देश भी इस अवसर पर दिया गया।



जे एस पी एल फाउंडेशन द्वारा ग्राम पतरापाली में संचालित आशा दी होप व्यवसायिक प्रशिक्षण एवं पुनर्वास केंद्र विशेष बच्चों को सभी प्रकार की थेरेपी सेवा विशेषज्ञ प्रशिक्षकों द्वारा दी जाती है। जागरूकता कार्यक्रमों के इसी क्रम में 'वर्ल्ड ऑटिज्म अवेयरनेस डे' पर कोरोना काल के कारण आन लाइन बच्चों व उनके अभिभावकों को सचित्र सेवाएं उपलब्ध कराई गई। आर्टिज्म विकास से सम्बंधित बिमारी है जिसे पूरी तरह से ठीक तो नहीं किया जा सकता पर सही प्रशिक्षण व परामर्श के द्वारा सम्बंधित बच्चे को बहुत कुछ सिखाया जा सकता है जिससे वह उसके दैनिक जीवन में स्वयं की देख-रेख करने में मदद करता है। आशा दी होप के विशेषज्ञ प्रशिक्षकों द्वारा अब तक ऑटिज्म के अभी तक 40 आटिस्टिक बच्चों को सेवा दी गई है जिसमे से 25 विशेष बच्चे सेवा ले चुके हैं और 15 बच्चे अभी भी सेवा ले रहे हैं। कोविड-19 महामारी के सतर्कताओं के चलते दी जा रही आन लाइन सेवाओं की सफल 2,500 सत्र हो चुके हैं।



ग्राम परसदा के विद्यालय में लगाए नीम के पौधे

'वर्ल्ड ऑटिज्म जागरूकता दिवस' के अवसर पर आज ग्राम परसदा के विद्यालय में नीम के पौधे लगाए गए। इस दौरान वृक्षारोपण में मौजूद सी एस आर विभाग के उप महाप्रबन्धक शिशिर तरफदार ने कहा की जिस प्रकार एक पौधे की समुचित सुरक्षा व बड़े होने के लिए देखरेख की जरुरत है वैसे एक ऑटिजम पीड़ित बच्चे के विकास के लिए परिवार का और समाज का सभी का भरपूर स्नेह और सहयोग की जरुरत है। ऑटिज्म को स्वलीनता, आत्मविमोह, स्वपरायणता के नाम से जाना जाता है। इससे प्रभावित व्यक्ति एक ही कार्य को बार बार दुहराना या सिमित व दोहराव मुक्त व्यवहार करता है। ये विकार बच्चों में तीन बरस के दौरान ही शुरू हो जाता है जिससे उनका विकास अन्य बच्चों की अपेक्षा असामान्य होता है। उपरोक्त लक्षण दिखने पर आक्यूपेशन थेरेपिस्ट, मनोवैज्ञानिक, बाल चिकित्सक या प्रशिक्षित विशेषज्ञ से तुरंत संपर्क किया जा सकता है।